विद्यालय नेतृत्व: विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि को समझना

हिन्दी
हमारा विद्यालय rural area में located है। गाँव में होने की वजह से यहाँ पर जो बच्चे आते हैं, ज़्यादातर lower socioeconomic status के बच्चे ही, हमारे सरकारी विद्यालय में प्रवेश ले रहे हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं, कि यहाँ पर जो education है, उसमें fees वग़ैरह nominal होती है। इसलिए ज़्यादातर बच्चे, यहाँ पर low socioeconomic status के हैं। तो इस वजह से हमको अपनी पूरी जो planning है, उसको करने के लिए, school context को समझना बहुत जरूरी होता है। उसमें मुख्य रूप से है कि बच्चे, हमारे विद्यालय में जो बच्चे आ रहे हैं, उनका previous background कैसा है? Background में उनका family background आता है। इसके साथ-साथ उनका जो reading writing skills हैं, understanding abilities हैं, उनको भी समझना बहुत जरूरी है। केवल father नहीं, father और mother दोनों क्या काम करते हैं? बच्चों के घर का वातावरण कैसा है? कितने उनके siblings हैं? ये सब भी हम लोगों ने record में रखा है। Survey किया था। Questionnaire बच्चों से भरवाया था। तो school context समझकर हम बच्चों के हिसाब से planning कर सकते हैं। और हमने अपनी teachers का भी एक profile बनाया है। जब मैंने यहाँ पर, as a Principal join किया, तो मैंने देखा, कि बच्चे harvesting season में, उनकी attendance बहुत कम होती है। ज़्यादातर बच्चे farming profession से जुडे हुए parents के बच्चे हैं। तो वो farming के लिए अपने बच्चों को. अपने साथ ले जाते हैं। और nineth और tenth के बच्चे थोडा बडे होते हैं, तो ये अपने parents को support करते हैं। तो इसके लिए मैंनें बच्चों से भी बात किया, और हमारे जो class teachers हैं उनके साथ, हमने planning किया कि बच्चों की attendance कम होती है, जब कोई खेत में काम ज़्यादा होता है। जैसे गेहूँ बोना है, या धान काटना है, या धान बोना है, तो वो बच्चे farming के लिए चले जाते हैं। तो पहले तो हमने बच्चों को समझाया। Prayer के time पर assembly जब होती है, हमारे यहाँ, उस के बाद मैंनें बच्चों को convince किया।

उनसे कहा कि, ''आप बहुत lucky हैं, कि आपके गाँव में school खुला है! वरना आप class eighth के बाद, शायद, आपको दूर जाना पड़ता, पढ़ने के लिए।'' मैंनें उनको ये नहीं कहा कि, ''आप नहीं पढ़ते।'' मैंनें ये बोला कि, ''शायद आपको दूर जाना पडता। तो आप बहुत lucky हैं।''

उन्होंने घर में जाके अपने parents को बोला कि, ''हमारा school बहुत अच्छा है, बहुत अच्छी पढ़ाई होती है। हम वहाँ पर पढ़कर बहुत अच्छे इन्सान बनेंगे!''

क्योंकि मैंने focus इसपर नहीं किया था कि वो teacher बनेंगे, डॉक्टर बनेंगे, इंजिनिअर बनेंगे।

पहले उनको मैंने कहा था, ''अच्छा इन्सान होना जरूरी है। तो आप लोग जब भी absent होइए, हमको सही reason बताइए। झूठ मत बोलिए।''

Starting में हमने बहुत ज़्यादा इस पर focus किया कि, ''जब भी आप school नहीं आते हैं, मुझे सही reason आप बताइए कि, आप खेत पर काम करने गये थे, या आप अपने किसी relative के यहाँ गये थे, या आपके घर में कोई guest आया था।''

तो जब फिर बच्चों ने धीरे-धीरे शुरू किया सच बोलना, जब सच बोलना शुरू किया, तो मैंने positively react किया।

जब positively react किया, तो बच्चे अब, आज की स्थिति ये है कि, अगर बच्चे को school से छुट्टी चाहिए होती है, तो वो पहले से application देता है कि, ''मुझे दो दिन के लिए ये काम है, तीन दिन के ये लिए काम है।''

तो पहले वो आकर मुझे बोलता है। फिर उसका reason अगर genuine होता है, तो मैं teacher को बोलती हूँ, तो वो उसको फिर रोकते नहीं हैं। ऐसे क्या होगा, कि हम अगर रोकेंगे, तो वो अपनेआप absent हो जायेगा।

तो rural area में थोडा attendance को improve करने के लिए, हमको बच्चों में moral values inculcate करके... सभी बच्चे अच्छे होते हैं। Depend करता है कि हम उनको कैसे tackle करते हैं।

तो अगर हम उन बच्चों को डाँटते हैं कि, ''आप आते नहीं हो! या school में absent होते हो! नाम काट देंगे!'' तो उनका reaction होता है कि, ''ठीक है! हमें कौनसा, जो है वो, हमें तो farming करना है!''

लेकिन नहीं, हम लोगों ने बच्चों का जो context को समझते हुए कि, बच्चों का क्या, बच्चों का background क्या है?

उनकी क्या क्या जरूरते हैं? उनको समझते हुए अपनी teaching process को plan किया।

ये एक जो है, मैंनें यहाँ पर आके, इस पर काम करना शुरू किया है। और अभी भी हम उसी तरीके से काम कर रहे हैं।

हमारी attendance में काफी improvement हुआ है।